व्यापारिक वर्ग एवं स्वतंत्रता आन्दोलन: एक अध्ययन (झुन्झुनूँ के विशेष सन्दर्भ में)

डॉ. प्रताप सिंह

सहायक आचार्य, मास्टर हजारी लाल शर्मा राजकीय महाविद्यालय, चिड़ावा (झुन्झुनूँ)

सारांश

भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में जयपुर रियासत के शेखावाटी प्रदेश में झुन्झुनूँ कस्बे के व्यापारिक वर्ग की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। जिनमें प्रमुख व्यापारिक वर्ग बिड़ला, डालमिया, पोदार, सेकसरिया, कानोड़िया, केडिया, रूंगटा, खेतान, अलखपुरिया, हिम्मतसिंहका, जादूका, गुटगुटिया, मोदी, शाह, नेमानी आदि है।

झुन्झुनूँ के प्रमुख व्यापारी सेठ घनश्यामदास बिड़ला, रामकृष्ण डालमिया, सेठ छाजूराम अलखपुरिया, आनन्दीलाल पोदार, सेठ भागीरथ कानोड़िया, सीताराम सेकसरिया, सेठ हरिराम गुटगुटिया, नागरमल जादूका, विठ्ठलदास मोदी, प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका, देवीबक्स सर्राफ आदि स्वतंत्रता आन्दोलन के नेताओं महात्मा गाँधी, मदनमोहन मालवीय, सुभाषचन्द्र बोस, सरदार वल्लभभाई पटेल से प्रभावित थे।

झुन्झुनूँ के इन व्यापारियों ने स्वतंत्रता आन्दोलन की विभिन्न गतिविधियों को संचारित करने में अहम् भूमिका निभाई थी। निष्कर्षतः स्वतंत्रता आन्दोलन की पृष्ठभूमि में प्रमुख रूप से व्यापारिक वर्ग ही था। वर्तमान में भी देश की विभिन्न गतिविधियाँ व्यापारिक वर्ग से ही प्रभावित है।

मुख्य शब्द: व्यापारिक वर्ग, सेठ, वित्तीय फंड, स्वतन्त्रता आन्दोलन

प्रस्तावना

शेखावाटी के सेठों की नगरी कहा जाने वाला झुन्झुनूँ कस्बा इतिहास एवंसंस्कृति के सन्दर्भ में सम्पूर्ण भारतवर्ष में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। जिसकी स्थापना हिसार (हरियाणा) के नवाब मुहम्मद खाँ ने 1450 ई. में की।[1] जिसका भौगोलिक क्षेत्रफल 5929 वर्ग किलोमीटर है। यह उत्तरी अक्षांश 27°50' से 28°50' वू पूर्वी देशान्तर 75° से 76° पर स्थित है। इसकी सीमाएँ उत्तर-पश्चिम में चूरू जिला, पश्चिम-दक्षिण में सीकर जिला एवं पूर्व में हरियाणा प्रान्त को छूती है।[2]

प्रमुख व्यापारिक वर्ग

भारत के विभिन्न क्षेत्रों में व्यापारिक वर्ग की अहम भूमिका रही। जिनमें पिलानी के बिड़ला। चिड़ावा के डालमिया, सोमानी, भघेरिया। बगड़ के माखरिया, रूंगटा। झुन्झुनूँ के खेतान, गाडिया, कायां । नवलगढ़ के पोद्दार, सेकसरिया, मोर, पाटोदिया, नेवटिया, जैपुरिया। मुकुन्दगढ़ के कानोड़िया। डूण्डलोद के गोयनका। मण्डावा के सर्राफ चौखानी, लाठ, लड़िया, रामगढिया। बिसाऊ के खेमका, रूंगटा। गुढ़ा गौड़जी के जादूका, गुटगुटिया, सर्राफ, मोदी। उदयपुरवाटी के शाह। केड के केडिया। काजड़ा के केजड़ीवाल। लाम्बा गोठड़ा के अलखपुरिया। चूड़ी अजीतगढ़ के नेमानी। मण्ड्रेला के लाठ। सूरजगढ़ के कायां, सर्राफ। सिंघाणा के हिम्मतसिंहका, खेतड़ी के शाह, सर्राफ आदि ने भारत मे ही नही बल्कि विदेशों में भी अपने व्यापार को स्थापित किया।[3]

प्रमुख व्यापारी

झुन्झुनूँ के प्रमुख व्यापारी सेठ घनश्यामदास बिड़ला, रामकृष्ण डालमिया, सेठ पीरामल माखरिया, सेठ छाजूराम अलखपुरिया, आनन्दीलाल पोदार, गोविन्दराम सेकसरिया, सीताराम सेकसरिया, सेठ भागीरथ कानोड़िया, बसन्तलाल मुरारका, सेठ मोतीलाल झुन्झुनूँवाला, काशीनाथ गाडिया, रामेश्वर नोपानी, प्रभुदयाल हिम्मतसिहंका, सेठ हरिराम गुटगुटिया,

नागरमल जादूका, विट्ठलदास मोदी, किशनलाल केडिया, मोतीलाल लाठ, सेठ जमनादास अडूकिया, रामेश्वरलाल सर्राफ, भगवतीप्रसाद लड़िया आदि प्रमुख थे। महात्मा गाँधी, पं. जवाहरलाल नेहरू, सुभाषचन्द्र बोस एवं सरदार वल्लभभाई पटेल जैसे राष्ट्रीय नेताओं से प्रभावित हो झुन्झुनूँ की जनता मे राजनैतिक जागृति उत्पन कर उसे स्वतंत्रता आन्दोलन से सम्बद्ध किया जाए।[4]

बंगाल विभाजन आन्दोलन

सेठ जमनालाल बजाज के प्रयासों व प्रेरणा से घनश्यामदास बिड़ला, सीताराम सेकसरिया, भागीरथ कानोड़िया, प्रभुदयाल हिम्मतसिहंका आन्दोलनों से जुडते गए व आर्थिक तथा नैतिक स्तर पर मजबूत करने लगे।[5] झुन्झुनूँ के व्यापारियों पर राष्ट्रीय जन जागृति के व्यापक प्रभाव पड़ने से देश के स्वाधीनता संघर्ष मे रूचि लेने लगे। 1905 ई. में बंग-भंग के विरोध में विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार कर स्वदेशी आन्दोलन प्रारम्भ किया। मैनचेस्टर चेंम्बर ऑफ कॉमर्स पर दबाव डाला कि वे ब्रिटिश सरकार पर बंगाल विभाजन वापस लेने के लिए दबाव डाले।[6]

क्रान्तिकारी संस्थाएँ

1905 से 1917 के मध्य क्रान्तिकारी गतिविधियो में सक्रिय भाग लेने लगे। कलकता की 'स्वदेश बांधव' व 'अनुशीलन समिति' से घनिष्ठ सम्बन्ध रहे। घनश्यामदास बिड़ला का क्रान्तिकारी विपिन गांगुली, ओकारमल सर्राफ का आशुतोष लाहिड़ी तथा प्रभुदयाल हिम्मतसिहंका का अतुलनाथ से सम्पर्क था। बसन्तलाल मुरारका ने शरतचन्द्र बोस को एक लाख ग्यारह हजार रूपए की थैली भेंट की थी।[7] घनश्यामदास बिड़ला ने प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका, देवीदत्त जालान के साथ मिलकर 1911 में चौरंगी में 'मारवाड़ी स्पोर्टिंग क्लब' (राजस्थान क्लब) की स्थापना की। इसका उद्देश्य क्रांतिकारियों गतिविधियों में भाग लेने के लिए व्यापारिक नवयुवकों को हथियार चलाना सिखाया जाता था।[8]

1913 मे कलकता के बड़ा बाजार में 'मारवाड़ी सहायक समिति' तथा 'हिन्दी नाट्य परिषद' स्थापित संस्थाओ का मुख्य उद्देश्य सांस्कृतिक विकास था, लेकिन राष्ट्रीय जागरण अभियान मे जुटी रही। 'साहित्य संवद्धिनी समिति' धार्मिक शिक्षा के माध्यम से क्रान्ति फैलाने का प्रयास करती थी।

रोडा काण्ड

कलकत्ता मे 1914 मे प्रसिद्ध रोड़ा काण्ड हुआ। आ.बी. रोड़ा कम्पनी विदेशो से आग्नेयास्त्र आयात किया था। अनुशीलन समिति ने गायब करवाकर घनश्यामदास बिड़ला, ज्वालाप्रसाद कानोड़िया, प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका व ओकारमल सर्राफ की गिरफ्तारी के वारण्ट जारी किए गए थे किन्तु वे सबूत के अभाव मे इन पर राजद्रोह का मामला नहीं बना, उन्हे लम्बे समय तक नजरबंद रखा गया। जमनालाल बजाज प्रथम व्यापारी थे, जिन्होंने रोडा काण्ड में पकड़े गए नौजवान साथियो के साहस की सराहना की, उन्हें बधाई देकर उत्साह बढ़ाया।[9]

कलकत्ता मे घनश्यामदास बिड़ला की मित्रमण्डली पर भारतीय राजनीति के गरम दल का प्रभाव बढ़ा रहा था। बालगंगाधर तिलक, लाला लाजपतराय, विपिन गांगुली से नजदीकियाँ बढ़ी और साथ ही कर्मवीर गाँधीजी से मिलने का शुभ-संयोग शीघ्र मिला।[10] 1915 में महात्मा गाँधी, पं. मदनमोहन मालवीय, सरदार वल्लभभाई पटेल, पं. जवाहरलाल नेहरू जैसे राष्ट्रीय नेताओं के सम्पर्क में आ गए थे। उन्हें तथा राष्ट्रीस स्वाधीनता आन्दोलन को आर्थिक मदद भी करते रहे।[11] साथ ही व्यापारिक युवकों से सक्रिय राजनीति से जुड़ने का आह्वान किया। एनीबीसेन्ट के होमरूल आन्दोलन में कई व्यापारियों ने गिरफ्तारियाँ दी। जलियांवाला बाग की घटना में भी अनेक व्यापारी गोलियों से मारे गए थे।[12]

तिलक स्वराज फण्ड

1921 मे 'तिलक स्वराज कोष' मे चन्दा इकट्ठा करना भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का प्रथम प्रयास था।[13] नागपुर के कांग्रेस अधिवेशन मे महात्मा गाँधी के आह्वान पर तिलक स्वराज कोष मे सेठ आनन्दीलाल पोदार ने 2,10,000 रू., घनश्यामदास बिड़ला 1,00,000 रू. व अन्य व्यापारियों ने 2,00,000 रू· दिए। कलकत्ता के बड़ा बाजार से 10,00,000 रू. एकत्रित किए गए सेठ रामकृष्ण डालमिया ने तो कांग्रेस को कई मदों में करोडों रूपये दिए थे।[14]

समाचार पत्र एवं साहित्य

भारत में राष्ट्रीय आन्दोलन के विचारों को क्रान्ति देने में समाचार पत्र तथा साहित्यिक स्त्रोतों की अहम् भूमिका रही। जिसमें हिन्द नवजीवन, हरिजन, कर्मवीर, प्रताप, त्यागभूमि, लीडर, भारत मित्र, राजस्थान केसरी आदि समाचार-पत्र प्रमुख थे। बम्बई में 'गाँधी हिन्दी पुस्तक भण्डार' और दिल्ली में 'सस्ता साहित्य मण्डल' नामक प्रकाशन की स्थापना की। जिन्हें घनश्यामदास बिड़ला, रामकृष्ण डालमिया, भागीरथ कानोड़िया आदि ने आर्थिक सहायता प्रदान की।[15] अक्टूबर, 1924 को मदनमोहन मालवीय के साथ मिलकर घनश्यामदास बिड़ला ने 'हिन्दुस्तान टाईम्स' को खरीदा और मालवीयजी के संरक्षण में इसे स्वतंत्रता संग्राम के लिए न्यौछावर कर दिया।[16]

असहयोग आन्दोलन

महात्मा गाँधी के असहयोग आन्दोलन में सर्वाधिक सहयोग व्यापारिक वर्ग ने दिया। इस वर्ग ने आर्थिक सहायता के साथ-साथ व्यक्तिगत रूप से सत्याग्रह में भाग लेकर गिरफ्तारियाँ दी। घनश्यामदास बिड़ला, प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका, भागीरथ कानोड़िया, सीताराम सेकसरिया ने महात्मा गाँधी के आह्वान पर खादी प्रचार-प्रसार, हरिजन उद्धार आदि रचनात्मक कार्यक्रमों को चलाया। राधाकृष्ण नेवटिया के घर पर स्त्रियों की सभा हुई, जिसमें राष्ट्रीय आन्दोलन के लिए धन की अपील की तथा खादी पहनने पर जोर दिया। विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार में इन्दुमति गोयनका, भगवान देवी सेकसरिया, गंगा देवी कानोडिया आदि की भूमिका रही।[17] रामकृष्ण डालमिया ने बम्बई में विदेशी वस्त्रों की होली जलाई और खादी पहनने पर बल दिया।[18] गाँधी ने गोरखपुर के चौरी-चोरा काण्ड के कारण असहयोग आन्दोलन को स्थगित कर दिया। कलकत्ता के नेताओं ने इस चेतना को बनाए रखने के लिए 'ब्लैक हॉल' नामक आन्दोलन प्रारम्भ किया।[19] बेनीप्रसाद डालमिया ने बम्बई में 1927 में साइमन कमीशन का विरोध किया था। इसमें देश के सभी प्रान्तों के व्यापारिक वर्ग का समर्थन था।[20]

सविनय अवज्ञा आन्दोलन

महात्मा गाँधी के 1930 में ऐतिहासिक नामक सत्याग्रह में व्यापारिक वर्ग के प्रमुख भूमिका रही। सीताराम सेकसरिया, बसन्तलाल मुरारका, विनयाकप्रसाद हिम्मतसिंहका, रमा देवी मुरारका, इन्दुमति गोयनका को कैद की सजा दी गई। कानपुर में 1930 के स्वदेशी आन्दोलन में जुलूस का नेतृत्व लाला कमलापत सिंघानिया ने किया। घनश्यामदास बिड़ला का 'बिड़ला हाऊस' तथा बृजलाल रूंगटा का 'रूंगटा हाऊस' राष्ट्रीय नेताओं के आतिथ्य के लिए तैयार रहते थे। गाँधी के अहिंसात्मक आन्दोलन के बावजूद कई व्यापारी क्रान्तिकारी गतिविधियों में भाग लेते रहे। क्रांतिकारियों को आर्थिक सहायता के साथ छिपने की जगह देते थे। कानपुर में रामचन्द्र मुसद्दी के यहाँ 1930 में चन्द्रशेखर आजाद नौ महीने रहे थे। बंगाल के व्यापारियों के घरों में क्रान्तिकारियों का आना-जाना बना रहता था। व्यक्तिगत सत्याग्रह में शामिल होने के कारण श्रीदेवी मुसद्दी को कठोर यातनाएँ दी गई थी।[21]

1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन का प्रस्ताव बम्बई के बिड़ला हाऊस में स्वीकृत किया गया। इस आन्दोलन में अधिकाधिक व्यापारियों ने भाग लिया। गोविन्दराम सेकसरिया ने 1942 में कांग्रेस के ऐतिहासिक बम्बई अधिवेशन का आर्थिक दायित्व निभाया और जेल गए कार्यक्रर्ताओं के घरों पर आर्थिक सहायता पहुँचाई।[22]

भारत छोड़ों आन्दोलन

प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका का 1942 के आन्दोलन में अहम् योगदान रहा। जिसने कलकत्ता में 'करो या मरो' नामक भूमिगत पत्रिका का प्रकाशन किया। असम तथा बिहार के बहुत से नेता उनके घर पर छिपे हुए थे। आन्दोलन को भूमिगत रहकर संचालित किया।[23] विनायकप्रसाद हिम्मतसिंहका को आन्दोलन में भाग लेने के कारण अलीपुर सेन्ट्रल जेल में रखा गया।[24] बिहार के पूर्णियाँ जिले में 1942 के आन्दोलन में 'रूपौली मर्डर काण्ड' में नागरमल जादूका को मुख्य अभियुक्त मानकर माँगीलाल तथा चिरंजीलाल जादूका के साथ नेपाल में गिरफ्तार किया गया। इन्हें विराटनगर (नेपाल) तथा पूर्णिया (बिहार) जेल में रखा गया। इस केस के मुकदमे की पैरवी के लिए भूलाभाई देसाई को नियुक्त किया और बरी कर दिया गया।[25] सुभाषचन्द्र बोस की आजाद हिन्द फौज के गठन और उसके विकसित करने में व्यापारियों ने उनकी काफी मदद की। नवलगढ़ के प्रसिद्ध सेठ सीताराम सेकसरिया एवं भागीरथ कानोड़िया ने वृहदहस्त आर्थिक मदद की।[26]

जन्मस्थली आन्दोलन

झुन्झुनूँ के प्रवासी व्यापारियों ने भारत के विभिन्न क्षेत्रों में ही नही, अपितु अपनी जन्म भूमि में भी राष्ट्रीय आन्दोलन की ज्वाला प्रज्वलित की। 1920 में रामेश्वर रामगढ़िया के नेतृत्व में स्थानीय नेता महात्मा गाँधी का भाषण सुनने के लिए भिवानी (हरियाणा) गए थे। राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेने का संकल्प लेकर वापस लौटे। भीमराज तुलस्यान (मुकन्दगढ़) के घर में राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेने वाले नेताओं का जमघट रहता था। सेठ पीरामल माखरिया (बगड़) राष्ट्रीय नेताओं को शरण देते थे।[27]

सेठ देवीबक्स सर्राफ ने 1927 ई. में मण्डावा में आर्य समाज का भवन बनाया। कलकत्ता में बने हुए आर्य समाज भवन की अनुकृति जैसा ही था। 1931 में आयोजित जलसे में किसान नेताओं तथा महिलाओं ने भाग लिया, जिससे राष्ट्रीय चेतना के प्रति नई लहर, नया जोश तथा नए जीवन का संचार हुआ।[28]

झुन्झुनूँ में राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए पाठशालाओं की स्थापना की, इसके लिए व्यापारियों ने ट्रस्ट स्थापित किए। यथा आनन्दीलाल पोद्दार एज्युकेशन ट्रस्ट, कानोड़िया एज्युकेशन ट्रस्ट, बिड़ला एज्युकेशन ट्रस्ट, मोतीलाल तुलस्यान एज्युकेशन चेरिटी ट्रस्ट, पीरामल एज्युकेशन ट्रस्ट आदि। सेठ विश्वम्भरदयाल माहेश्वरी एवं जौहरीलाल रूंगटा की शिक्षण संस्थाएँ भी महत्वपूर्ण रही। रामेश्वरदास बिड़ला ने 1926 में केशरदेव नेवटिया और जमनालाल बजाज के सहयोग से 'मारवाड़ी रिलीफ सोसायटी' (कलकत्ता) द्वारा 'शेखावाटी शिक्षा मण्डल' की स्थापना की, जो बाद में 'राजपूताना शिक्षा मण्डल' के नाम से प्रसिद्ध हुई। सेठ छाजूराम अलखपुरिया ने बृजमोहन लोयलका और जुगलकिशोर बिड़ला के सहयोग से पिलानी में ग्रामीण बालकों की शिक्षा के लिए छात्रावास का निर्माण करवाया। शेखावाटी में ग्रामीण इलाके की शिक्षा का श्रीगणेश यहीं से हुआ।[29]

चिड़ावा आन्दोलन में प्यारेलाल गुप्ता की महत्वपूर्ण भूमिका रही। गाँधीवादी रचनात्मक कार्यो में अभिभूत होने के कारण इन्हें चिड़ावा का गाँधी कहा जाता था। गुलाबचन्द नेमानी को आन्दोलन में भाग लेने के कारण खेतड़ी जेल में रखा गया। चिड़ावा आन्दोलन के तत्पश्चात् प्यारेलाल गुप्ता ने झुन्झुनूँ में दुर्गादत्त कायां के साथ हरिजन पाठशाला में शिक्षक का कार्य किया।[30] कमलाप्रसाद भीमराजका ने भी दलित आन्दोलन में महत्वपूर्ण योगदान दिया।[31]

1924 से 1939 तक घनश्यामदास बिड़ला, सीताराम सेकसरिया, भागीरथ कानोड़िया, सेठ देवीबक्स सर्राफ, ताराचन्द डालमिया, दुर्गादत्त कायां आदि के झुन्झुनूँ के किसान आन्दोलन को आर्थिक मदद देकर उनका समर्थन किया।[32] किसान नेता हरलालसिंह बगड़ प्रवास के समय जौहरीलाल रूंगटा तथा रामनिवास रूंगटा से स्वतंत्रता आन्दोलन तथा शिक्षा क्षेत्र की गतिविधियों में परामर्श लेते थे।[33] 1940 के पश्चात् रंगलाल गाडिया किसान आन्दोलन में सक्रिय हुए।[34] 1939 में जकात आन्दोलन का मातादीन भघेरिया के नेतृत्व में व्यापारियों ने विरोध किया था।[35]

जमनालाल बजाज 1936 से 1939 तक देशी रियासतों की समस्या के निराकरण में जुट गए थे।[36] जनवरी, 1939 में जयपुर राज्य (रियासत) ने प्रजामण्डल की, जो उत्तरदायी शासन की माँग कर रहा था, गैर कानून घोषित कर दिया और जमनालाल बजाज के जयपुर राज्य में प्रवेश पर प्रतिबन्ध लगा दिया। कलकत्ता की मित्रमण्डली के लगभग सभी सदस्य जयपुर राज्य की प्रजा थी। सीताराम सेकसरिया और भागीरथ कानोड़िया के नेतृत्व में कलकत्ता के अनेक व्यापारी समर्थन देने के लिए जयपुर आए।[37] शेखावाटी के किसान आन्दोलन ने प्रजामण्डल को पूरा समर्थन दिया। झुन्झुनूँ, पिलानी, बगड़ आदि में सत्याग्रह के दौरान हडतालें, लाठीचार्ज और गिरफ्तारियाँ हुई। किसानों पर हो रहे अत्याचारों का विरोध करने के लिए सत्याग्रह कौंसिल ने सारे भारत में 01 मार्च, 1939 को 'जयपुर सत्याग्रह दिवस' मनाने का निश्चय किया, जो सर्वत्र बड़े उत्साह से मनाया गया।[38] किसान नेताओं ने किसान सभा का प्रजामण्डल में विलय कर जन शक्ति में वृद्धि की, जिससे किसानों को काफी राहत मिली।[39] सेठ पीरामल द्वारा स्थापित हरिजन पाठशाला के प्रधानाध्यापक बृजकिशोर शर्मा (क्रान्तिकारी प्रेमदत्त पालीवाल का नाम परिवर्तित) की प्रेरणा से पांच व्यक्तियों ने बम्बई आकर प्रजामण्डल आन्दोलन में भाग लिया।[40] अनुसूईया देवी बगड़का बम्बई से आकर अपने पति के साथ झुन्झुनूँ के आन्दोलन में भाग लेती रही।[41]

निष्कर्षत

कहा जा सकता है कि स्वतन्त्रता आन्दोलन का शंखनाद कहीं से भी हुआ हो, परन्तु उस शंखनाद का रण शेखावाटी की धरा ही रही है। जिसमें वर्तमान झुन्झुनूँ जिले के दानवीर व्यापारिक योद्धाओं ने कदम से कदम मिलाते हुए सम्पूर्ण भारतवर्ष के लिए आजादी की भूमिका तैयार की। किसी भी आन्दोलन के लिए धन और शिक्षा की सुझ-बूझ आवश्यक होती है और दोनों ही विषय वस्तु झुन्झुनूँ के व्यापारियों ने राष्ट्रीय आन्दोलन को गति प्रदान करने के लिए सौगात के रूप में प्रदान की।

सन्दर्भ

1. ग्रीनदरीनदनण्तंरें जींदण्हवअण्पद / इंवनजपेजवतल
2. शेखावत, रघुनाथसिंह, 1981, झुन्झुनूँ मण्डल का इतिहास, झुन्झुनूँ, श्री शार्दल शेखावाटी इतिहास शोध संस्थान, पृ.सं. 1-2
3. शर्मा, रामगोपाल, 2002, राजस्थान में प्रजामण्डल आन्दोलन भाग-3, जयपुर, राजस्थान स्वर्ण जयंती समारोह समिति, पृ.सं. 87
4. वही, पृ.सं. 87-88
5. गुप्ता, डॉ. मंजु, 2010, स्वतंत्रता संग्राम एवं जमनालाल बजाज, जयपुर, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पृ.सं. 44
6. जालान, नन्दकिशोर, 1985, शेखावाटी नवलिका, खण्ड-1, कलकत्ता, श्री नवलगढ़ विद्यालय कमेटी, पृ.सं. 127
7. शाह, प्रमोद, 1994, मंचिका अधिवेशन विशेषांक, दिल्ली, अखिल भारतीय युवा मंच, पृ.सं. भारत के स्वाधीनता आन्दोलन में मारवाड़ी।
8. लाल, डॉ. लक्ष्मीनारायण, 1987, स्वराज और घनश्यामदास, दिल्ली, प्रभात प्रकाशन, पृ.सं. 76
9. शाह, प्रमोद, 1994, पृ.सं. भारत के स्वाधीनता आन्दोलन में मारवाड़ी।
10. लाल, डॉ. लक्ष्मीनाराण, 1987, पृ.सं. 17
11. सारस्वत, माधवानन्द, 2008, बिरला पिलानी दिग्दर्शन, पिलानी, प्रियंका प्रकाशन, पृ.सं. 69
12. शर्मा, डॉ. गिरिजाशंकर, 2012, मारवाड़ी (दृष्टि-प्रतिदृष्टि) बीकानेर, विकास प्रकाशन, पृ.सं. 101
13. टिम्बर्ग, टॉमस ए., 1978, मारवाड़ी समाज व्यवसाय से उद्योग में, नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, पृ.सं. 73
14. शर्मा, गिरजिाशंकर, 2012, पृ.सं. 101
15. उपाध्याय, हरिभाऊ, 1951: श्रेयार्थी जमनालाल जी, नई दिल्ली, सस्ता साहित्य मण्डल, पृ.सं. 178
16. लाल, डॉ. लक्ष्मीनारायण, 1987, पृ.सं. 130
17. टकनेत, डी.के., 1990, मारवाड़ी समाज, जयपुर, कुमार प्रकाशन, पृ.सं. 193-194
18. द्विवेदी, हरिशंकर, 1988, श्रीरामकृष्ण डालमिया स्मृति ग्रन्थ, नई दिल्ली, पमपोष एनक्लेव, पृ.सं. 109
19. टकनेत, डी.के. 1990, वही, पृ.सं. 197
20. शर्मा, सागरमल, 1990, चिड़ावा अतीत से आज तक, चिड़ावा, चिड़ावा शोध संस्थान, पृ.सं. 269
21. टकनेत, डी.के., 1990, पृ.सं. 201-203
22. स्वतंत्रता सेनानी श्री सांवलराम भारतीय के साथ नवलगढ़ में भेंटवार्ता, 2015
23. नवेटिया, राधाकृष्ण, 1984, श्री प्रभुदयाल, हिम्मतसिंहका अभिनन्दन ग्रंथ, कलकत्ता, श्री प्रभदुयाल हिम्मतसिंहका अभिनन्दन-समिति, पृ.सं. 65
24. केडिया पुष्करलाल, 1986, श्री विनायकप्रसाद हिम्मतसिंहका अभिनन्दन ग्रन्थ कलकत्ता, श्री विनायकप्रसाद हिम्मतसिंहका अभिनन्दन-समिति, पृ.सं. 23
25. गुटगुटिया, हरिराम, 1995, स्वतन्त्रता संग्राम (1857-1942) व मारवाड़ी समाज, गाजियाबाद, हरिराम रामनाथ, पृ.सं. 175
26. ठाकुर, रामेश्वर, 1993, सीताराम सेकसरिया, जन्म शताब्दी ग्रंथ, नई दिल्ली, गाँधी हिन्दुस्तानी साहित्य सभा, पृ.सं. 37
27. वर्मा, मदनलाल, 2001, शेखावाटी अंचल-555 वर्ष, जयपुर, शेखावाटी अंचल, पृ.सं. 19-21
28. मिश्र, रतनलाल, 1999, शेखावाटी आर्य समाज के चार स्तम्भ, अमेरिका, किंग्सटन, घासीराम वर्मा, पृ.सं. 34-39
29. वर्मा, मदनलाल, 2001, वही, पृ.सं. 25-28
30. सिंह, मोहन, 1990 रू शेखावाटी में स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास, झुन्झुनुँ, रवीन्द्र प्रकाशन, पृ. सं. 190-192
31. शर्मा, सागरमल, 1990, वही, पृ.सं. 277
32. वही, पृ.सं. 15-16

33. वर्मा मदनलाल, 2001, वही, पृ.सं. 26
34. सिंह, मोहन, 1990, वही, पृ.सं. 332
35. भारतीय सांवलराम, 1987, आजादी के जन आन्दोलन (नवलगढ़ अंचल), नवलगढ,ः जनवादी पुस्तकालय, पृ.सं. 4-5
36. गुप्ता, मंजु, 2010, वही, पृसं. 69
37. सिंघी भंवरमल, 1981, स्वर्गीय भागीरथ कानोड़िया स्मृति-ग्रंथ, कलकत्ता, श्री भागीरथ कानोड़िया स्मारक समिति, पृ.सं. 38-39
38. परिहार, विनीता, 2016, राजस्थान में प्रजामण्डल आन्दोलन, जयपुर, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पृ.सं. 45
39. व्यास, रामप्रसाद, 2016, आधुनिक राजस्थान का वृहत इतिहास, खण्ड-11, जयपुर, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पृ.सं. 346
40. सिंह, मोहन, 1990, वही, पृ.सं. 179
41. वही, पृ.सं. 275